दूर शिक्षा निदेशालय

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

एम. ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, सत्र : 2015-2017

पाठ्यक्रम कोड : एम एच डी

प्रथम वर्ष

सत्रीय कार्य एवं परियोजना कार्य निर्देश-पुस्तिका

क्रमांक	सत्रीय कार्य / परियोजना कार्य कोड	कहाँ प्रेषित करें	सम्बन्धित अध्ययन केन्द्र के पते पर सत्रीय कार्य / परियोजना कार्य पहुँचने की निर्धारित अन्तिम दिनांक
01. 02. 03. 04. 05.	एम एच डी – 01 : सत्रीय कार्य एम एच डी – 02 : सत्रीय कार्य एम एच डी – 03 : सत्रीय कार्य एम एच डी – 04 : सत्रीय कार्य एम एच डी – 05 : परियोजना कार्य	सम्बन्धित अध्ययन केन्द्र के पते पर	31.03.2019

- अध्ययन केन्द्र पर पंजीकृत विद्यार्थी अपने-अपने सत्रीय कार्य / परियोजना कार्य अध्ययन केन्द्र पर ही जमा कराएँ। ऐसे विद्यार्थियों के सत्रीय कार्य / परियोजना कार्य का मूल्यांकन सम्बन्धित अध्ययन केन्द्र पर ही किया जाएगा।

दूर शिक्षा निदेशालय
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
गांधी हिल्स, पोस्ट : हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र – 442 001
फोन / फैक्स नं. : 07152-247146 वेबसाइट : http://hindivishwa.org/distance/

›

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित एक केंद्रीय विश्वविद्यालय)

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

पुरन्दरदास
पाठ्यक्रम संयोजक

दिनांक : 14.11.2018

दूर शिक्षा निदेशालय
एम. ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, सत्र : 2015-2017, प्रथम वर्ष

सत्रीय कार्य एवं परियोजना कार्य
दिशा-निर्देश

एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, सत्र : 2015-17, प्रथम वर्ष की प्रथम चार पाठ्यचर्याओं में विद्यार्थी को प्रत्येक पाठ्यचर्या में 01–01 अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य तथा पंचम पाठ्यचर्या (परियोजना कार्य : हिन्दी की संस्कृति का विशेष अध्ययन) से सम्बन्धित 01 परियोजना कार्य सम्पूर्ण कर जमा कराना अनिवार्य है।

प्रत्येक सत्रीय कार्य में विद्यार्थी को कुल 03 प्रश्नों के विश्लेषणात्मक उत्तर लिखने हैं। प्रत्येक प्रश्न के अधिकतम अंक 10 हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 1000 शब्दों में लिखना है।

पंचम पाठ्यचर्या (परियोजना कार्य : हिन्दी की संस्कृति का विशेष अध्ययन) से सम्बन्धित परियोजना कार्य में विद्यार्थी को प्रस्तावित विषयों में से प्रत्येक इकाई में से 02–02 यानी कुल 08 चयनित विषयों का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर सम्बन्धित हस्तलिखित रिपोर्ट प्रस्तुत करनी है जिसके अधिकतम अंक 100 हैं। प्रत्येक चयनित विषय का विवेचन-विश्लेषण लगभग 1250 शब्दों में करना है।

पूर्ण किये गए सत्रीय कार्यों तथा परियोजना कार्य को मूल्यांकन हेतु निर्धारित अन्तिम दिनांक से पूर्व सम्बन्धित अध्ययन केन्द्र पर जमा कराएँ तथा प्रस्तुत सत्रीय कार्यों तथा परियोजना कार्य की एक-एक छायाप्रति अपने पास अनिवार्यतः सुरक्षित रखें।

*****

सत्रीय कार्य का उद्देश्य :-

सत्रीय कार्य का उद्देश्य विश्वविद्यालय द्वारा विद्यार्थी को उपलब्ध करायी गई पाठ्य-सामग्री को विद्यार्थी की हस्तलिपि में पुनः प्राप्त करना नहीं है अपितु विद्यार्थी की अध्ययन-प्रवृत्ति में निरन्तरता बनाए रखने के साथ ही उसके द्वारा अब तक किए गए अध्ययन का मूल्यांकन करना है। विद्यार्थी ने पाठ्यक्रम हेतु निर्धारित पाठ्य-पुस्तकों तथा सम्बन्धित पाठ्य-सामग्री को कितना पढ़ा-समझा है, उसका विवेचन-विश्लेषण करने की कितनी क्षमता अर्जित की है तथा सम्बन्धित पाठ्य के विषय में उसका अपना दृष्टिकोण कितना विकसित हुआ है ! आदि उद्देश्यों को दृष्टि में रखने के साथ-साथ विद्यार्थी की लेखन-क्षमता का मूल्यांकन करना भी सत्रीय कार्य का लक्ष्य है । विद्यार्थियों को सत्रीय कार्यों में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखते समय उपर्युक्त उद्देश्यों को स्मरण रखना चाहिए तथा प्राप्त पाठ्य-सामग्री का पुनर्प्रस्तुतीकरण न करते हुए अध्ययन उपरान्त अपनी विकसित विचार-क्षमता के आधार पर ही उत्तर लिखने का प्रयास करना चाहिए । पूछे गए प्रश्न के उत्तर में विद्यार्थी का अध्ययन, उसकी आलोचनात्मक दृष्टि, पाठ्य के विषय में उसकी अपनी समझ आदि के साथ ही भाषा एवं वर्तनी सम्बन्धी ज्ञान की अपेक्षा की जाती है । उपर्युक्त अपेक्षाओं को दृष्टि में रखकर ही विद्यार्थी द्वारा प्रेषित सत्रीय कार्यों का मूल्यांकन किया जाएगा ।

सत्रीय कार्य लेखन :-

विद्यार्थी सत्रीय कार्य लिखने से पूर्व कृपया निम्नलिखित निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें :-

01. योजना :- प्रथमतः सत्रीय कार्य के सभी प्रश्नों को पढ़कर उनका आशय समझ लीजिए । तदनन्तर सम्बन्धित पाठ्य-सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़िए । पूछे गए प्रश्नों से सम्बन्धित इकाइयों को मनोयोग से पढ़िए । निर्धारित पाठ्य-पुस्तकों का गहन अध्ययन कीजिए । साथ ही, सुझायी गई सहायक पुस्तकों को भी रुचिपूर्वक पढ़िए। पढ़ते समय प्रत्येक उत्तर से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण तथ्य चिह्नित कर लीजिए और अन्तिम प्रति तैयार करने से पूर्व उन्हें तार्किक क्रम में व्यवस्थित कर लीजिए ।
02. संगठन कौशल :- अपने उत्तर को अन्तिम रूप देने से पूर्व एक कच्ची रूपरेखा बना लीजिए, श्रेष्ठतम तथ्य संकलित करने का प्रयास कीजिए और उसके समुचित विवेचन-विश्लेषण हेतु चिन्तन कीजिए। उत्तर लिखते समय प्रस्तावना और समाहार पर विशेष ध्यान दीजिए । कृपया ध्यान रखिए कि पूछे गए प्रश्नों के उत्तर तर्कसंगत हों, वाक्य-विन्यास और वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियाँ न हों, अनुच्छेदों में परस्पर तारतम्यता हो तथा भाव, शैली और प्रस्तुति का पर्याप्त संयोजन किया गया हो ।
03. सत्रीय कार्य लेखन :- सत्रीय कार्य विद्यार्थी द्वारा स्वयं की हस्तलिपि में सम्पन्न किया जाना है । पूछे गए प्रश्नों की अन्तिम प्रति स्वच्छ, स्पष्ट, पठनीय अक्षरों में लिखित, वर्तनी सम्बन्धी दोषों से रहित, प्रारूपबद्ध और बिना काट-छाँट किए तथा भली प्रकार नत्थी/स्पाइरल बाइंडिंग की गई हो । आवश्यकता प्रतीत होने पर मुख्य बिन्दुओं को रेखांकित किया जा सकता है । उत्तर-पुस्तिका में केवल नीले अथवा काले रंग की स्याही वाले पेन अथवा बॉलपेन का ही प्रयोग कीजिए । उत्तर-

पुस्तिका में प्रश्नों के उत्तर पूछे गए प्रश्नों के क्रमानुसार ही लिखिए । किसी भी प्रश्न का उत्तर लिखना प्रारम्भ करने से पूर्व सम्बन्धित प्रश्न क्रमांक अवश्य लिखिए। प्रत्येक नए उत्तर का प्रारम्भ नए पृष्ठ से कीजिए । उत्तर-पुस्तिका हेतु A–4 साइज़ के कागज़ों का प्रयोग करें । कार्य सम्पन्नोपरान्त सभी कागज़ों को भली प्रकार नत्थी कर लीजिए । विद्यार्थियों को सलाह दी जाती है कि अपनी उत्तर-पुस्तिका की सुरक्षित प्रस्तुति हेतु वे समस्त कागज़ों को स्पाइरल बाइंडिंग करा लें। विद्यार्थी अपनी सुविधानुसार गुणवत्तापूर्ण कागज़ के बड़े आकार के जिल्दबंद रजिस्टर में भी सत्रीय कार्य प्रस्तुत कर सकते हैं। सत्रीय कार्य के अन्तिम पृष्ठ पर कुल पृष्ठ संख्या लिखकर अपने हस्ताक्षर कीजिए। सत्रीय कार्य की विद्यार्थी द्वारा स्वयं की हस्तलिपि में लिखित प्रति ही स्वीकार की जाएगी । आवश्यकता प्रतीत होने पर विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत सत्रीय कार्य में लिखित हस्तलिपि (हेंड राइटिंग) तथा सत्रांत परीक्षा में विद्यार्थी द्वारा उत्तर-पुस्तिका में लिखित हस्तलिपि (हेंड राइटिंग) का मिलान करवाया जाएगा। दोनों की हस्तलिपि (हेंड राइटिंग) में भिन्नता पाए जाने पर ऐसे सत्रीय कार्यों का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा। सत्रीय कार्य की कंप्यूटर टंकित प्रति अस्वीकार्य है। कंप्यूटर टंकित सत्रीय कार्यों का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।

सत्रीय कार्य प्रस्तुतीकरण :

सत्रीय कार्य प्रस्तुतीकरण से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़िए :--

01. सत्रीय कार्य उत्तर-पुस्तिका के मुख पृष्ठ के प्रारूप हेतु परिशिष्ट क्रमांक - 01 देखिए।
02. उत्तर-पुस्तिका के मुखपृष्ठ के शीर्षभाग पर सर्वोपरि दूर शिक्षा निदेशालय, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा का नाम एवं पूर्ण पता लिखिए।
03. उत्तर-पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर विश्वविद्यालय के नाम और पते के नीचे पाठ्यक्रम का नाम : एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, सत्र : 2015-17, वर्ष : प्रथम वर्ष, पाठ्यक्रम कोड : एम एच डी, पाठ्यचर्या क्रमांक, पाठ्यचर्या का शीर्षक तथा सत्रीय कार्य कोड लिखिए।
04. उत्तर-पुस्तिका के मुखपृष्ठ के मध्यभाग में अपना पूरा नाम (कृपया नाम के पहले श्रीमती/कुमारी/सुश्री/श्री/डॉ. न लिखें), अनुक्रमांक, नामांकन संख्या, पत्राचार पता (पिन कोड सहित) तथा मोबाइल नं. लिखिए।
05. उत्तर-पुस्तिका के मुखपृष्ठ के निम्नभाग में सम्बन्धित अध्ययन केन्द्र का नाम एवं पता लिखिए तथा स्थान एवं दिनांक अंकित करते हुए अपने हस्ताक्षर अवश्य कीजिए। अहस्ताक्षरित प्रति अस्वीकार्य है।
06. सत्रीय कार्य उत्तरपुस्तिका को परियोजना कार्य की रिपोर्ट के साथ जाँच हेतु सम्बन्धित अध्ययन केन्द्र के पते पर जमा करा दीजिये । लिफ़ाफ़े के शीर्ष पर **सत्रीय कार्य एवं परियोजना कार्य, एम. ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, सत्र : 2015-2017, प्रथम वर्ष (एम एच डी)** अवश्य लिखिए।

एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, सत्र : 2015-17 , प्रथम वर्ष

सत्रीय कार्य प्रश्नपत्र क्रमांक – I

सत्रीय कार्य कोड : एम एच डी – 01 **अधिकतम अंक : 30%**

पाठ्यचर्या का शीर्षक : आधुनिक गद्य

- **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 03 प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 1000 शब्दों में लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न के अधिकतम अंक 10 हैं।**

1. जयशंकर प्रसाद हिन्दी नाटक की अभिजात साहित्यिक गरिमा के प्रतिष्ठापक हैं। प्रसाद-विरचित नाटकों का परिचय दीजिए और उनके नाट्य साहित्य का अवदान प्रतिपादित कीजिए।
2. प्रेमचंद-साहित्य में अभिव्यक्त तत्युगीन सामाजिक स्थितियों को रेखांकित कीजिए।
3. "निबन्ध गद्य की कसौटी है। निबन्ध-रचना में शैली का महत्त्वपूर्ण स्थान है। निबन्ध की सर्वोत्तम अवस्था वही है जिसमें भाव और भाषा का सामञ्जस्य हो अर्थात् कल्पना, विचार और मनोभावों का यथायोग्य स्थान हो और उनके प्रतिपादन करने का ढंग भी उत्तम हो। रचना-चमत्कार की यह प्रणाली शैली कहलाती है।" पाठ्यक्रम में निर्धारित निबन्धों के सन्दर्भ में उक्त कथन की युक्तियुक्त मीमांसा कीजिए।
4. हिन्दी की पहली कहानी कौन-सी है ? इस सम्बन्ध में किन कहानियों का नाम लिया जाता है ? विभिन्न विद्वानों के मतों का उल्लेख करते हुए तर्कसहित अपना मत प्रकट कीजिए।
5. नयी कहानी के बाद उसके विकास-क्रम में अनेक आन्दोलन हुए हैं। विभिन्न कहानी आन्दोलनों एवं उनकी प्रवृत्तियों का विश्लेषण कीजिए।

*****

एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, सत्र : 2015-17 , प्रथम वर्ष

सत्रीय कार्य प्रश्नपत्र क्रमांक – II

सत्रीय कार्य कोड : एम एच डी – 02 **अधिकतम अंक : 30%**

पाठ्यचर्या का शीर्षक : हिन्दी साहित्य का इतिहास

- **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 03 प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 1000 शब्दों में लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न के अधिकतम अंक 10 हैं।**

1. हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखन में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की भूमिका और महत्त्व प्रतिपादित कीजिए।
2. हिन्दी साहित्य के आदिकाल में रचित आध्यात्मिक साधना से सम्बन्धित साहित्य का परिचय दीजिए।
3. विभिन्न विद्वानों के मतों का उल्लेख करते हुए भक्ति आन्दोलन के उदय की पृष्ठभूमि पर विचार कीजिए।
4. रीतिकालीन साहित्य की प्रेरक शक्तियों और परिस्थितियों का विवेचन कीजिए तथा यह स्पष्ट कीजिए कि इन परिस्थितियों से उद्भूत यह साहित्य किस स्तर का है।
5. हिन्दी कविता में आधुनिकता का क्या आशय है ? आधुनिककाल का प्रारम्भ कब से माना जाता है ? इस काल के लिए कौन-कौनसी परिस्थितियाँ और शक्तियाँ प्रेरणा बनकर आयीं ? विस्तारपूर्वक समझाइए।

*****

एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, सत्र : 2015-17 , प्रथम वर्ष

सत्रीय कार्य प्रश्नपत्र क्रमांक – III

सत्रीय कार्य कोड : एम एच डी – 03 **अधिकतम अंक : 30%**

पाठ्यचर्या का शीर्षक : प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

- **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 03 प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 1000 शब्दों में लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न के अधिकतम अंक 10 हैं।**

1. विद्यापति विरचित किन्हीं पाँच भक्ति विषयक पद और किन्हीं पाँच शृंगार विषयक पदों की ससन्दर्भ भावपूर्ण व्याख्या कीजिए। पद में निहित वैशिष्ट्य को भी यथास्थान उद्घाटित कीजिए।
2. निर्गुण सन्त कवियों की 'अणभै वाणी' का अनुशीलन करते हुए बाह्याचार-खण्डन से सम्बन्धित एक काव्य-संकलन तैयार कीजिए जिसमें तीर्थादि भ्रमण, पर्वस्नान, उपवास-रोजा, मूर्ति-पूजा, विवि-विधान और नाना भाँति के बाह्याडम्बरों की व्यर्थता सिद्ध की गयी है।
3. "सूरदास के काव्य में जितनी सहृदयता एवं भावुकता है, प्रायः उतनी ही चतुरता और वाग्विदग्धता भी।" भ्रमरगीत से उपयुक्त उद्धरण देते हुए उक्त कथन की मीमांसा कीजिए।
4. तुलसीदास के राम का स्वरूप-विश्लेषण करते हुए कबीर के राम और तुलसी के राम में साम्य और वैषम्य को स्पष्ट कीजिए।
5. "सतसैया के दोहरे ज्यों नावक के तीर" इस कथन के आलोक में बिहारी की काव्य-कला की परीक्षा कीजिए।

*****

एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, सत्र : 2015-17 , प्रथम वर्ष

सत्रीय कार्य प्रश्नपत्र क्रमांक – IV

सत्रीय कार्य कोड : एम एच डी – 04 **अधिकतम अंक : 30%**

पाठ्यचर्या का शीर्षक : प्रयोजनमूलक हिन्दी

- **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 03 प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 1000 शब्दों में लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न के अधिकतम अंक 10 हैं।**

1. केन्द्र सरकार के किसी कार्यालय की राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन की वस्तुस्थिति पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।
2. राजभाषा आयोग, संसदीय राजभाषा समिति, राष्ट्रपति का आदेश, राजभाषा अधिनियम, राजभाषा संकल्प तथा राजभाषा नियम सम्बन्धी प्रावधानों का उल्लेख करते हुए राजभाषा हिन्दी की संवैधानिक स्थिति को स्पष्ट कीजिए।
3. किसी राजभाषा / हिन्दी अधिकारी से हिन्दी-समारोह पर विमर्श कर एक रिपोर्ट बनाइए।
4. कॉपी लेखन व्यावसायिक लेखन है। उसकी विषयवस्तु का आधार कई तरह की रिसर्च होती है। रिसर्च से जो निष्कर्ष निकलते हैं, उनसे कम्पनी विज्ञापन एजेंसी के साथ मिलकर एक रणनीति तैयार करती है। यानी किसी उत्पाद को बाज़ार में किस रूप में उतारना है, उसकी बिक्री प्रस्तावना क्या होगी – यह सब मार्केटिंग के लोग तय करते हैं। प्रिंट रेडियो एवं टेलीविज़न अलग-अलग माध्यम हैं और उनके लिए कॉपी भी अलग ही लिखी जाती है। इतना होने पर भी उनके बीच कुछ बातें समान रहती हैं। कॉपी लेखन की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए और प्रिंट, रेडियो एवं टेलीविज़न के लिए कॉपी लेखन प्रक्रिया को सोदाहरण समझाइए।
5. विषय-वस्तु की दृष्टि से अनुवाद का वर्गीकरण कीजिए।

*****

एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, सत्र : 2015-17 , प्रथम वर्ष

परियोजना कार्य

परियोजना कार्य कोड : एम एच डी – 05 **अधिकतम अंक : 100%**

पाठ्यचर्या का शीर्षक : हिन्दी की संस्कृति का विशेष अध्ययन

एम एच डी – 05 पाठ्यचर्या हिन्दी की संस्कृति के विशेष अध्ययन से सम्बन्धित एक परियोजना कार्य है जिसमें विद्यार्थी से अपेक्षा की जाती है कि वह निर्धारित प्रत्येक इकाई में से 02–02 संस्थाओं, पत्रिकाओं, आन्दोलनों तथा प्रकाशकों/साहित्यिक केन्द्रों/माध्यमों से सम्बद्ध विषय का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करे एवं प्रत्येक से सम्बन्धित विषय का लगभग 1250 शब्दों में परियोजना कार्य प्रस्तुत करे। निर्धारित चारों इकाइयाँ तथा सम्बन्धित प्रस्तावित विषय निम्नलिखित हैं :-

इकाई-1 : हिन्दी की संस्कृति : संस्थाएँ

नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी एवं आरा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, पटना, गया, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, चैन्नई, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, भारतीय भाषा परिषद्, कोलकाता, भारतीय हिन्दी परिषद्, इलाहाबाद, हिन्दी क्षेत्र की प्रमुख नाट्य-संस्थाएँ आदि।

इकाई-2 : हिन्दी की संस्कृति : पत्रिकाएँ

हिन्दी प्रदीप, आनन्द कादंबिनी, ब्राह्मण, सरस्वती, प्रताप, मर्यादा, सुधा, माधुरी, मतवाला, विशाल भारत, प्रभा, चाँद, हंस, नई कहानियाँ, कल्पना, दिनमान, आलोचना, पूर्वग्रह, प्रतीक, धर्मयुग, नटरंग, पहल, वसुधा, रंग-प्रसंग, तद्भव, दलित अस्मिता, मगहर, लहर, वातायन, ज्ञानोदय, कहानी, कवि, कृति, नई कविता, इंदु, नई धारा, ज्योत्स्ना, माध्यम आदि।

इकाई - 3 : हिन्दी की संस्कृति : आन्दोलन

ब्रजभाषा बनाम खड़ी बोली, खड़ी बोली का आन्दोलन, हिन्दी-उर्दू-हिन्दुस्तानी विवाद, प्रगतिशील आन्दोलन, परिमल, भारतीय नाट्य आन्दोलन, दलित लेखन, लघुपत्रिका आन्दोलन, हिन्दी की आभासी (वर्चुअल) दुनिया आदि।

इकाई - 4 : हिन्दी की संस्कृति और उसका प्रसार

(1) हिन्दी के प्रमुख प्रकाशक, यथा – राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स, नयी दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, इंडियन प्रेस प्रा.लि., इलाहाबाद, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, ज्ञानमंडल प्रा. लि., वाराणसी, साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, किताब महल, इलाहाबाद, मोतीलाल बनारसीदास, पटना, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी आदि : साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियाँ

(2) हिन्दी क्षेत्र के प्रमुख केन्द्र, यथा – कलकत्ता, पटना, बनारस, इलाहाबाद, दिल्ली, भोपाल : साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियाँ

(3) साहित्य का अन्य माध्यमों में रूपान्तरण : साहित्यिक कृति पर आधारित फ़िल्म / सिनेमा और टेलीविजन धारावाहिक

सहायक पुस्तकें :

01. आज के अतीत, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
02. आधुनिक हिन्दी के विकास में खड्गविलास प्रेस की भूमिका, धीरेन्द्रनाथ सिंह, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना
03. उर्दू का आरंभिक युग, शम्सुर्रहमान फारूकी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
04. खड़ी बोली का आन्दोलन, शितिकंठ मिश्र, नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी
05. खत्री-स्मारक ग्रंथ, सम्पादक : नलिनविलोचन शर्मा, शिवपूजन सहाय, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना
06. दक्षिण के हिन्दी प्रचार का समीक्षात्मक इतिहास, पी.के. केशवन नायर, हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ
07. 'नया पथ' पत्रिका, अंक : जनवरी-जून 2012, सम्पादक : मुरलीमनोहरप्रसाद सिंह, चंचल चौहान
08. नवजागरणकालीन पत्रकारिता और सारसुधानिधि, सम्पादक: कर्मेन्दु शिशिर, अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली
09. नागरीप्रचारिणी सभा : वार्षिक विवरण, नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी
10. प्रगतिशील आन्दोलन के इतिहास पुरुष, खगेन्द्र ठाकुर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
11. परिमल : स्मृतियाँ और दस्तावेज, केशवचंद्र वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
12. राष्ट्रभाषा पर विचार, चंद्रबली पाण्डेय, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
13. राष्ट्रीय जागरण और हिन्दी पत्रकारिता का आदिकाल, सुजाता राय, अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली
14. रोशनाई, सज्जाद जहीर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

15. रंग दस्तावेज : सौ साल (दो खण्ड), सम्पादक : महेश आनन्द, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
16. सभापतियों के भाषण (तीन खण्ड), हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
17. समाचार-पत्रों का इतिहास, अंबिकाप्रसाद वाजपेयी, ज्ञानमंडल लि. वाराणसी
18. सरस्वती और राष्ट्रीय जागरण, हरप्रकाश गौड़, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
19. हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी , पद्मसिंह शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
20. हिन्दी का मौखिक इतिहास, नीलाभ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा
21. हिन्दी की प्रचार संस्थाएँ : स्वरूप और इतिहास, डॉ॰ अनीता ठक्कर, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, संस्करण : 2009
22. हिन्दी की विकास यात्रा, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा का इतिहास, लेखक, सं.: डॉ॰ केशव प्रथमवीर, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा
23. हिन्दी पत्रकारिता, कृष्णबिहारी मिश्र, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2011
24. हिन्दी साहित्य की समस्याएँ, सम्पादक : रघुवंश, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
25. हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास, नरेश मेहता, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

उपयोगी वेबसाइट्स :

1. http://epgp.inflibnet.ac.in/ahl.php?csrno=18
2. http://www.hindisamay.com/
3. http://hindinest.com/
4. http://www.dli.ernet.in/
5. http://www.archive.org

*****

परियोजना कार्य का उद्देश्य :-

हिन्दी की समवेत संस्कृति की स्थापना, विस्तार एवं प्रचार-प्रसार में विभिन्न प्रचार संस्थाओं/ नाट्य-संस्थाओं, पत्र-पत्रिकाओं, साहित्यिक आन्दोलनों, पुस्तकालयों, विश्वविद्यालयों के हिन्दी विभागों, प्रकाशकों, साहित्यिक केन्द्रों तथा साहित्यिक कृतियों पर बनने वाले सिनेमा और टेलीविजन धारावाहिकों आदि का विशेष योगदान रहा है। प्रस्तुत पाठ्यचर्या का उद्देश्य है कि एम. ए. स्तर का विद्यार्थी पाठ्यक्रम में निर्धारित पाठ्य तक ही सीमित न रहकर हिन्दी की विस्तृत संस्कृति से भी भली-भाँति परिचित हो सके।

परियोजना कार्य के विभिन्न चरण :-

01. विषय-निर्वाचन : विद्यार्थी को प्रत्येक इकाई में से 02–02 यानी सम्पूर्ण परियोजना कार्य के रूप में कुल 08 विषयों का चयन करना है। पाठ्यचर्या की प्रथम इकाई हिन्दी की संस्कृति को समृध्द करने में सहायक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बन्धित है। द्वितीय इकाई हिन्दी की संस्कृति को समृध्द करने में सहायक पत्र-पत्रिकाओं से सम्बन्धित है। तृतीय इकाई हिन्दी की संस्कृति की आधारभूमि को सुदृढ़ करने में सहायक साहित्यिक आन्दोलनों से सम्बन्धित है। चतुर्थ इकाई हिन्दी की संस्कृति को व्यापकता प्रदान करने में सहायक प्रकाशकों, साहित्यिक केन्द्रों तथा साहित्यिक कृतियों पर बनने वाले सिनेमा/धारावाहिकों आदि से सम्बन्धित है। विद्यार्थी परियोजना कार्य हेतु निर्धारित प्रत्येक इकाई में प्रस्तावित विषयों में से किन्हीं 02–02 संस्थाओं, पत्रिकाओं, आन्दोलनों तथा प्रकाशकों/साहित्यिक केन्द्रों/माध्यमों का चयन करने हेतु स्वतन्त्र है। विद्यार्थियों को सलाह दी जाती है कि वे ऐसे विषयों का चयन करें जिनके अध्ययन में उनकी रुचि हो तथा जिसके अपेक्षित संसाधन (पाठ्यसामग्री आदि) स्थानीय तौर पर उन्हें सहजता से सुलभ हो सकें। विषय का चयन पर्यवेक्षक/पाठ्यक्रम संयोजक से अनुमति प्राप्त कर ही किया जाना चाहिए।
02. परियोजना कार्य पर्यवेक्षक का निर्वाचन : विद्यार्थी परियोजना कार्य पर्यवेक्षक निर्वाचन सम्बन्धी जानकारियों हेतु दूर शिक्षा निदेशालय की वेबसाइट http://hindivishwa.org/distance/ पर सूचना पट्ट >>> परियोजना कार्य पर्यवेक्षक सम्बन्धित सूचनाओं का अवलोकन कर सकते हैं। अध्ययन केंद्रों द्वारा पंजीकृत विद्यार्थी परियोजना कार्य निर्देशन हेतु अध्ययन केन्द्र पर सम्पर्क करें।
03. सामग्री-संकलन : विद्यार्थी से अपेक्षा की जाती है कि वह चयनित प्रचार-संस्थाओं ; पत्र-पत्रिकाओं ; साहित्यिक आन्दोलनों के साक्षी/आधिकारिक विदूषियों/विद्वानों ; प्रकाशकों ; साहित्यिक केन्द्रों की गतिविधियों से जुड़े रहे पुरोधाओं अथवा उन साहित्यिक केन्द्रों के इतिहास को स्पष्ट करने वाले ग्रन्थों ; साहित्यिक कृतियों पर बनने वाले सिनेमा और टेलीविजन धारावाहिकों आदि से सम्पर्क करे उनका निकटता से अध्ययन करे तथा सम्बध्द विषय का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करे। इस प्रक्रिया के अन्तर्गत विद्यार्थी द्वारा अनुभवजन्य अध्ययन, प्रश्नावली, अनुसूची, साक्षात्कार सूची इत्यादि प्रविधियों का प्रयोग करना अपेक्षित है। विद्यार्थी को सम्बन्धित कार्यालय/स्थानीय पुस्तकालय में जाकर अथवा सम्बन्धित व्यक्तियों से सम्पर्क कर महत्त्वपूर्ण तथ्य संकलित करने चाहिए। विद्यार्थी को चयनित विषय से सम्बन्धित

अधिकाधिक सूचनाएँ तथा जानकारियाँ एकत्रित करनी चाहिए । विद्यार्थी को सुझायी गई सम्बन्धित सहायक पुस्तकों के अध्ययन के साथ ही उपयोगी वेबसाइट्स का भी ध्यानपूर्वक अवलोकन करना चाहिए।

04. तथ्य-विश्लेषण : सामग्री-संकलन के उपरान्त उसकी संवीक्षा करना परियोजना कार्य का एक महत्त्वपूर्ण चरण है । चूँकि प्रत्येक विषय के कथ्य को विवेचित-विश्लेषित करने हेतु मात्र 1250 शब्दों की सीमा निर्धारित की गयी है अत: संकलित-सामग्री में से अनावश्यक सूचनाओं को हटा कर केवल महत्त्वपूर्ण जानकारियों के आधार पर ही रिपोर्ट तैयार करनी चाहिए। संगृहीत तथ्यों के विश्लेषण उपरान्त विद्यार्थी को चयनित विषय से सम्बन्धित प्राप्त सूचनाओं को क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करना होता है । विद्यार्थी से अपेक्षा की जाती है कि वे महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक जानकारियों के आधार पर ही सम्बन्धित विषय की तथ्यपरक परियोजना कार्य रिपोर्ट तैयार करेंगे।

05. परियोजना कार्य रिपोर्ट लेखन : किसी भी परियोजना कार्य का परिणाम एक रिपोर्ट के रूप में सामने आता है । विद्यार्थियों को विभिन्न प्रविधियों द्वारा प्राप्त तथ्यों एवं निष्पत्तियों को पर्याप्त विस्तार के साथ विवेचित-विश्लेषित करना चाहिए। आवश्यकता होने पर तालिका/ग्राफ आदि के द्वारा भी उनकी प्रस्तुति की जा सकती है। विद्यार्थियों को यह स्मरण रखना चाहिए कि एक आदर्श परियोजना कार्य में सूचना-संग्रहण एवं स्वाध्यायपरक विवेचन-विश्लेषण दोनों का उचित संयोजन होना चाहिए। अतः परियोजना कार्य रिपोर्ट में तथ्यों की जानकारी आवश्यकतानुसार ही दें । अनावश्यक तथ्यों एवं सूचनाओं का प्रस्तुतीकरण आपकी परियोजना कार्य के प्रभाव को कम करता है।

06. परियोजना कार्य विद्यार्थी द्वारा स्वयं की हस्तलिपि में सम्पन्न किया जाना है। परियोजना कार्य रिपोर्ट की अन्तिम प्रति स्वच्छ, स्पष्ट, पठनीय अक्षरों में लिखित, वर्तनी सम्बन्धी दोषों से रहित, प्रारूपबद्ध और बिना काट-छाँट किए तथा भली प्रकार नत्थी/स्पाइरल बाइंडिंग की गई हो। आवश्यकता प्रतीत होने पर मुख्य बिन्दुओं को रेखांकित किया जा सकता है। परियोजना कार्य में केवल नीले अथवा काले रंग की स्याही वाले पेन अथवा बॉलपेन का ही प्रयोग कीजिए । परियोजना कार्य में प्रत्येक नए अध्याय का प्रारम्भ नए पृष्ठ से कीजिए। परियोजना कार्य रिपोर्ट हेतु A–4 साइज़ के कागज़ों का प्रयोग करें। कार्य सम्पन्नोपरान्त सभी कागज़ों को भली प्रकार नत्थी कर लीजिए। विद्यार्थियों को सलाह दी जाती है कि अपनी परियोजना कार्य रिपोर्ट की सुरक्षित प्रस्तुति हेतु वे समस्त कागज़ों को स्पाइरल बाइंडिंग करा लें। विद्यार्थी अपनी सुविधानुसार गुणवत्तापूर्ण कागज़ के बड़े आकार के जिल्दबंद रजिस्टर में भी परियोजना कार्य रिपोर्ट प्रस्तुत कर सकते हैं। परियोजना कार्य के अन्तिम पृष्ठ पर कुल पृष्ठ संख्या लिखकर अपने हस्ताक्षर कीजिए। परियोजना कार्य की विद्यार्थी द्वारा स्वयं की हस्तलिपि में लिखित प्रति ही स्वीकार की जाएगी। आवश्यकता प्रतीत होने पर विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत परियोजना कार्य में लिखित हस्तलिपि (हेंड राइटिंग) तथा सत्रांत परीक्षा में विद्यार्थी द्वारा उत्तर-पुस्तिका में लिखित हस्तलिपि (हेंड राइटिंग) का मिलान करवाया जाएगा। दोनों की हस्तलिपि (हेंड राइटिंग) में भिन्नता पाए जाने पर ऐसे परियोजना कार्य का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा। **परियोजना कार्य की कंप्यूटर टंकित प्रति अस्वीकार्य है । कंप्यूटर टंकित परियोजना कार्य का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।**

परियोजना कार्य प्रस्तुतीकरण :-

विद्यार्थी द्वारा तैयार की जानी वाली परियोजना कार्य का रिपोर्ट लेखन निम्नलिखित प्रारूप के अनुसार होना चाहिए :-

01. मुखपृष्ठ : परियोजना कार्य के मुखपृष्ठ पर विश्वविद्यालय का नाम एवं पता, पाठ्यक्रम का नाम, सत्र, वर्ष (प्रथम/द्वितीय), पाठ्यक्रम कोड, पाठ्यचर्या क्रमांक, पाठ्यचर्या शीर्षक, परियोजना कार्य कोड, परियोजना कार्य हेतु चयनित विषयों की सूची, विद्यार्थी का नाम, अनुक्रमांक, नामांकन संख्या, पत्राचार पता, मोबाइल नं., ई-मेल, परियोजना कार्य पर्यवेक्षक का नाम, पदनाम, पत्राचार पता, मोबाइल नं., ई-मेल, सम्बन्धित अध्ययन केन्द्र का नाम एवं पता लिखा होना चाहिए। साथ ही, विद्यार्थी को दिनांक एवं स्थान के उल्लेख के साथ स्व-हस्ताक्षर करने चाहिए। अहस्ताक्षरित परियोजना कार्य रिपोर्ट अस्वीकार्य है। (देखिए, परिशिष्ट क्रमांक – 02)

02. द्वितीय पृष्ठ : परियोजना कार्य का द्वितीय पृष्ठ घोषणा पत्र से सम्बन्धित है जिसमें विद्यार्थी अपने कार्य की मौलिकता के विषय में स्वहस्ताक्षरित घोषणा करता है। विद्यार्थियों को निर्देशित किया जाता है कि वे संलग्नित परिशिष्ट क्रमांक – 03 के प्रारूपानुसार घोषणा करते हुए घोषणा पत्र में अपेक्षित सूचनाओं को परिपूर्ण एवं स्व-हस्ताक्षरित कर संलग्न परियोजना कार्य रिपोर्ट के द्वितीय पृष्ठ के रूप में संलग्न करें। अहस्ताक्षरित घोषणा पत्र से युक्त परियोजना कार्य रिपोर्ट अस्वीकार्य है।

03. तृतीय पृष्ठ : परियोजना कार्य का तृतीय पृष्ठ परियोजना कार्य पर्यवेक्षक द्वारा देय हस्ताक्षरित प्रमाण-पत्र से सम्बन्धित है जिसमें परियोजना कार्य पर्यवेक्षक, जिनके निर्देशन में यह कार्य सम्पन्न किया गया है, द्वारा परियोजना कार्य की मौलिकता और निर्देशन को प्रमाणित किया जाता है। विद्यार्थियों को निर्देशित किया जाता है कि वे संलग्नित परिशिष्ट क्रमांक – 04 के प्रारूपानुसार स्वयं तथा परियोजना कार्य पर्यवेक्षक सम्बन्धी अपेक्षित सूचनाओं को परिपूर्ण कर परियोजना कार्य हेतु चयनित विषयों की सूची का उल्लेख करते हुए उसे परियोजना कार्य रिपोर्ट के तृतीय पृष्ठ के रूप में संलग्न करें।

04. चतुर्थ पृष्ठ : परियोजना कार्य का चतुर्थ पृष्ठ आभार ज्ञापन से सम्बन्धित है जिसमें विद्यार्थी द्वारा परियोजना कार्य में सहयोग प्रदान करने वाले व्यक्तियों और संस्थाओं का आभार व्यक्त किया जाता है।

05. पंचम पृष्ठ : परियोजना कार्य का पंचम पृष्ठ अनुक्रमणिका/विषय-सूची से सम्बन्धित है जिसमें विषय-अनुक्रम की सूची के साथ ही सम्बन्धित पृष्ठ संख्या की जानकारी दी जाती है।

06. परियोजना कार्य रिपोर्ट लेखन का मुख्य भाग : इसके कुल आठ विभाग होंगे –

(1) भूमिका : परियोजना कार्य का पहला भाग सम्पूर्ण परियोजना कार्य की भूमिका प्रस्तुत करता है जिसमें निम्नलिखित तथ्यों का समावेश होना चाहिए :- (i) परियोजना कार्य का परिचय, (ii) परियोजना कार्य का तर्क, (iii) परियोजना कार्य का उद्देश्य, (iv) परियोजना कार्य के विषय पर पूर्व में हो चुके कार्यों का साहित्य पुनरावलोकन (Review of Literature), (v) परियोजना कार्य की

परिकल्पना, (vi) परियोजना कार्य की शोध प्रविधि, जिसमें नमूने का आकार (Size of Sample), तथ्य-संकलन एवं विश्लेषण की विधियों का उल्लेख रहता है।

(2) प्रथम अध्याय : परियोजना कार्य का प्रथम अध्याय पाठ्यचर्या की प्रथम इकाई (हिन्दी की संस्कृति : संस्थाएँ) से सम्बन्धित होगा जिसमें विद्यार्थी द्वारा प्रस्तावित विषयों में से उसके द्वारा चयनित किन्हीं 02 प्रचार संस्थाओं से सम्बन्धित अपने अध्ययन की रिपोर्ट प्रस्तुत की जाएगी।

(3) द्वितीय अध्याय : परियोजना कार्य का द्वितीय अध्याय पाठ्यचर्या की द्वितीय इकाई (हिन्दी की संस्कृति : पत्रिकाएँ) से सम्बन्धित होगा जिसमें विद्यार्थी द्वारा प्रस्तावित विषयों में से उसके द्वारा चयनित किन्हीं 02 पत्र-पत्रिकाओं से सम्बन्धित अपने अध्ययन की रिपोर्ट प्रस्तुत की जाएगी।

(4) तृतीय अध्याय : परियोजना कार्य का तृतीय अध्याय पाठ्यचर्या की तृतीय इकाई (हिन्दी की संस्कृति : आन्दोलन) से सम्बन्धित होगा जिसमें विद्यार्थी द्वारा प्रस्तावित विषयों में से उसके द्वारा चयनित किन्हीं 02 साहित्यिक आन्दोलनों से सम्बन्धित अपने अध्ययन की रिपोर्ट प्रस्तुत की जाएगी

(5) चतुर्थ अध्याय : परियोजना कार्य का चतुर्थ अध्याय पाठ्यचर्या की चतुर्थ इकाई (हिन्दी की संस्कृति और उसका प्रसार) से सम्बन्धित होगा जिसमें विद्यार्थी द्वारा प्रस्तावित विषयों में से उसके द्वारा चयनित किन्हीं 02 प्रकाशकों/ साहित्यिक केन्द्रों/ साहित्यिक कृतियों पर बनने वाले सिनेमा अथवा धारावाहिकों से सम्बन्धित अपने अध्ययन की रिपोर्ट प्रस्तुत की जाएगी।

(6) उपसंहार : परियोजना कार्य के उपसंहार शीर्षक के अन्तर्गत सम्पूर्ण परियोजना कार्य के अध्यायवार निष्कर्ष प्रस्तुत करने के साथ ही सम्पूर्ण अध्ययन-अनुसंधान की निष्पत्तियाँ प्रकट की जाती हैं। एक श्रेष्ठ परियोजना कार्य रिपोर्ट प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण करने के साथ ही महत्वपूर्ण सुझाव भी प्रस्तुत करती है, यथा - उक्त प्रचार संस्थाओं/ नाट्य संस्थाओं, पत्र- पत्रिकाओं, साहित्यिक आन्दोलनों, पुस्तकालयों, विश्वविद्यालयों के हिन्दी विभागों, प्रकाशकों, साहित्यिक केन्द्रों तथा साहित्यिक कृतियों पर बनने वाले सिनेमा और टेलीविजन धारावाहिकों आदि हिन्दी की समवेत संस्कृति की स्थापना एवं विस्तार में किस प्रकार सहायक सिद्ध हुए हैं ? हिन्दी के प्रचार-प्रसार में इनकी क्या भूमिका रही ? क्या इनके अभाव में हिन्दी के वर्तमान स्वरूप की कल्पना की जा सकती है ? वर्षों से हिन्दी की थाती को संरक्षित रखने में महती भूमिका निभाने वाले उक्त संस्थानों का अस्तित्व बनाए रखना कितना आवश्यक है ? इसके लिए कौन-कौन-से उपाय किये जा सकते हैं ? इत्यादि।

(7) सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची : परियोजना कार्य के सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची शीर्षक के अन्तर्गत सम्पूर्ण परियोजना कार्य रिपोर्ट लेखन में उद्धरित ग्रंथों, पुस्तकों, वेबसाइट्स आदि का पूर्ण विवरण दिया जाता है।

(8) परिशिष्ट : परियोजना कार्य के परिशिष्ट शीर्षक के अन्तर्गत सम्पूर्ण परियोजना कार्य के दौरान विद्यार्थी द्वारा प्रयुक्त शोध प्रविधियों, प्रश्नावली, अनुसूची, साक्षात्कार सूची आदि को प्रदर्शित किया जाता है। परियोजना कार्य के दौरान विद्यार्थी द्वारा संगृहीत दुर्लभ छायाचित्र इत्यादि उल्लेखनीय सामग्री को भी परिशिष्ट के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है।

- परियोजना कार्य के अन्तिम पृष्ठ पर कुल पृष्ठ संख्या लिखकर अपने हस्ताक्षर कीजिए।

परिशिष्ट- 01

सत्रीय कार्य उत्तर-पुस्तिका के मुख पृष्ठ का प्रारूप

....

›

दूर शिक्षा निदेशालय
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
गांधी हिल्स, पोस्ट : हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र – 442 001
फोन / फैक्स नं. : 07152-247146 वेबसाइट : http://hindivishwa.org/distance/

....

एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, सत्र : 2015-17, प्रथम वर्ष
पाठ्यक्रम कोड : एम एच डी

पाठ्यचर्या क्रमांक:

पाठ्यचर्या का शीर्षक :

सत्रीय कार्य कोड :

....

विद्यार्थी का नाम :

अनुक्रमांक:

नामांकन संख्या:

पत्राचार पता :

मोबाइल नं. :

ई-मेल :

....

सम्बन्धित अध्ययन केन्द्र का नाम एवं पता :

दिनांक:

स्थान :

विद्यार्थी के हस्ताक्षर :

*****

परिशिष्ट- 02

परियोजना कार्य के मुख पृष्ठ का प्रारूप

....

›

दूर शिक्षा निदेशालय

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

गांधी हिल्स, पोस्ट : हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र – 442 001

फोन / फैक्स नं. : 07152-247146 वेबसाइट : http://hindivishwa.org/distance/

....

एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, सत्र : 2015-17, प्रथम वर्ष

पाठ्यक्रम कोड : एम एच डी

पंचम पाठ्यचर्या

पाठ्यचर्या का शीर्षक : परियोजना कार्य – हिन्दी की संस्कृति का विशेष अध्ययन

परियोजना कार्य कोड : MHD - 05

परियोजना कार्य हेतु चयनित विषयों की सूची :

इकाई -1: (1) (2)

इकाई -2: (1) (2)

इकाई -3: (1) (2)

इकाई -4: (1) (2)

....

परियोजना कार्य पर्यवेक्षक का नाम :

पदनाम :

पत्राचार पता :

मोबाइल नं. :

ई-मेल :

विद्यार्थी का नाम :

अनुक्रमांक :

नामांकन संख्या :

पत्राचार पता :

मोबाइल नं. :

ई-मेल :

सम्बन्धित अध्ययन केन्द्र का नाम एवं पता :

दिनांक :

स्थान :

विद्यार्थी के हस्ताक्षर

परिशिष्ट- 03

घोषणा पत्र का प्रारूप

....

एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, सत्र : 2015-17, प्रथम वर्ष

पाठ्यक्रम कोड : एम एच डी

पाठ्यचर्या क्रमांक : पंचम पाठ्यचर्या (परियोजना कार्य)

पाठ्यचर्या का शीर्षक : हिन्दी की संस्कृति का विशेष अध्ययन

परियोजना कार्य कोड : MHD – 05

....

घोषणा पत्र

मैं, (नाम) पुत्र/पुत्री श्रीमती/श्री (माता/पिता का नाम) एतद् द्वारा यह घोषणा करती/करता हूँ कि दूर शिक्षा निदेशालय, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा संचालित एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, सत्र : 2015-2017 के प्रथम वर्ष की परियोजना कार्य से सम्बन्धित पंचम पाठ्यचर्या MHD – 05 "हिन्दी की संस्कृति का विशेष अध्ययन" से सम्बन्धित मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत यह परियोजना कार्य रिपोर्टमेरे द्वारा सम्पन्न मौलिक कार्य है। मैं यह घोषणा भी करती/करता हूँ कि प्रस्तुत परियोजना कार्य रिपोर्ट आज से पूर्व किसी भी विश्वविद्यालय या संस्थान में मेरे अथवा किसी अन्य के द्वारा अंशतः अथवा पूर्ण रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया है।

विद्यार्थी का नाम :

अनुक्रमांक :

नामांकन संख्या:

पत्राचार पता :

मोबाइल नं. :

ई-मेल :

सम्बन्धित अध्ययन केन्द्र का नाम एवं पता :

दिनांक :

स्थान :

विद्यार्थी के हस्ताक्षर :

परिशिष्ट- 04

पर्यवेक्षक द्वारा देय प्रमाण पत्र का प्रारूप

एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, सत्र : 2015-17, प्रथम वर्ष
पाठ्यक्रम कोड : एम एच डी
पंचम पाठ्यचर्या
पाठ्यचर्या का शीर्षक : परियोजना कार्य – हिन्दी की संस्कृति का विशेष अध्ययन
परियोजना कार्य कोड : MHD - 05

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि दूर शिक्षा निदेशालय, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा संचालित एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, सत्र : 2015-2017 के प्रथम वर्ष की/के विद्यार्थी श्रीमती/ कुमारी/ सुश्री/ श्री (विद्यार्थी का नाम) पुत्र/ पुत्री श्रीमती/ श्री (माता/ पिता का नाम) ने एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, सत्र : 2015-2017 के प्रथम वर्ष की परियोजना कार्य से सम्बन्धित पंचम पाठ्यचर्या MHD - 05 "हिन्दी की संस्कृति का विशेष अध्ययन" हेतु प्रस्तुत परियोजना कार्य मेरे पर्यवेक्षण और मार्गदर्शन में सम्पन्न किया है। मेरी ज्ञात जानकारी के अनुसार यह इनका मौलिक कार्य है। परियोजना कार्य हेतु इनके द्वारा चयनित विषय निम्नलिखित हैं : --

परियोजना कार्य हेतु चयनित विषयों की सूची :

इकाई -1: (1) (2)

इकाई -2: (1) (2)

इकाई -3: (1) (2)

इकाई -4: (1) (2)

परियोजना कार्य पर्यवेक्षक का नाम :

पदनाम :

पत्राचार पता :

मोबाइल नं. :

ई-मेल :

विद्यार्थी का नाम :

अनुक्रमांक :

नामांकन संख्या:

पत्राचार पता :

मोबाइल नं. :

ई-मेल :

सम्बन्धित अध्ययन केन्द्र का नाम एवं पता :

दिनांक:

स्थान :

पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर